नेट्टी की दक्षिण यात्रा

एन टर्नर

नेट्टी की दक्षिण यात्रा

एन टर्नर

प्रिय अड्डी, आपने कहा, “मुझे अपनी दक्षिण यात्रा के बारे में बताओ; मुझे सब कुछ बताओ.
अगर हम अपने सेब के पेड़ के नीचे बैठे होते और अगर मैं आपको पूरी कहानी सुनाती, तो सुनाते-सुनाते वहाँ सूरज ढल जाता.
लेकिन कुछ ऐसी बातें हैं जो मुझे बिल्कुल साफ़ याद हैं, और हालांकि मैं केवल दस साल की हूं, पर मैंने गुलामों को देखा है, मैंने दक्षिण को भी देखा है.

माँ और पिताजी ने अलविदा कहा. घोड़ा-गाड़ी खड़खड़ाते हुए आगे बढ़ी. मैं नया फर का कोट पहने थी और बहुत रोना चाहती थी. मेरे साथ मेरी बहिन जूलिया थी जो अब चौदह साल की हो गई थी. बड़ा भाई लॉकवुड उत्साहित होकर चिल्लाया. वो किसी अखबार में नौकरी करने जा रहा था. पिता ने कहा, "जाओ, तुम सब जाओ. युद्ध जल्द शुरू हो सकता है. यही तुम्हारा मौका है दक्षिण को देखने का."
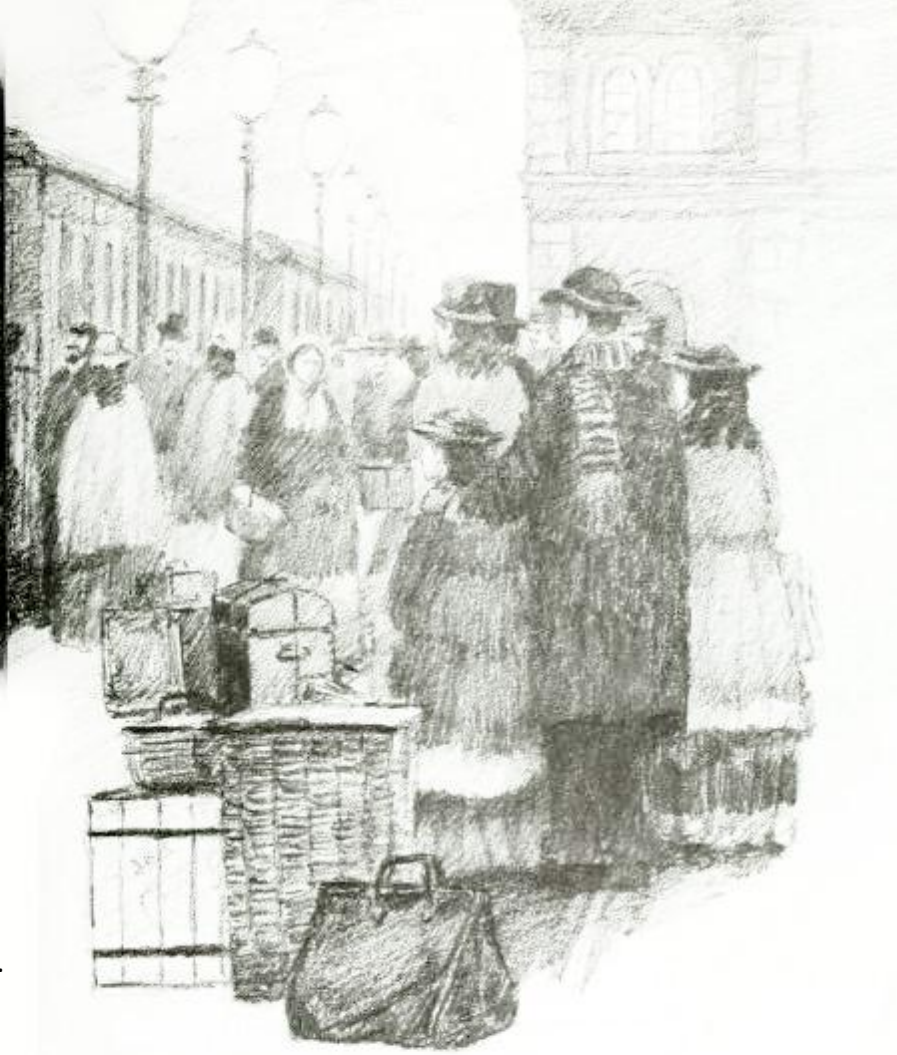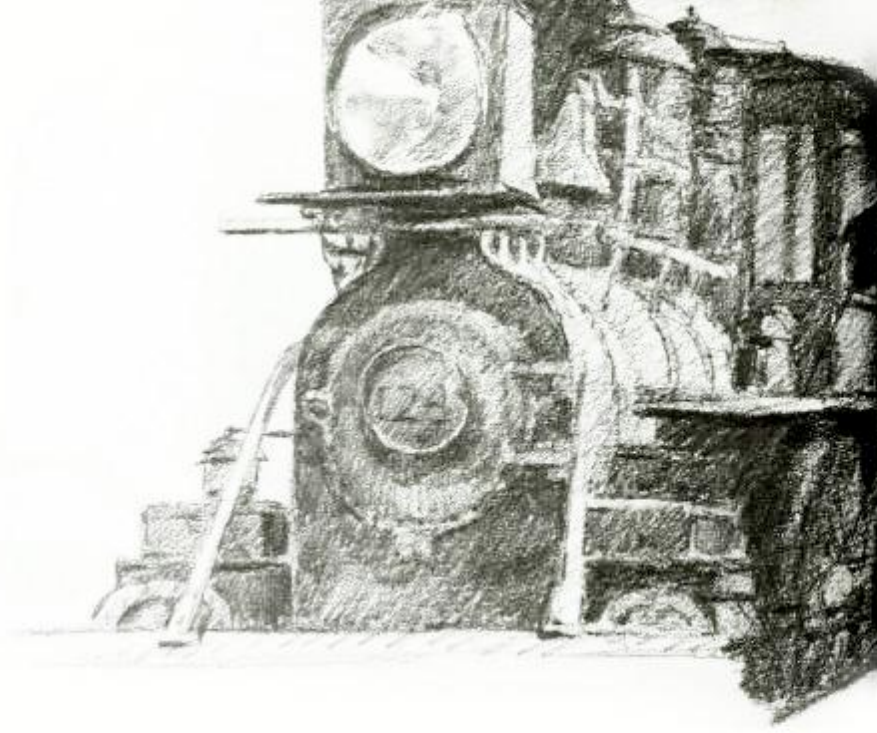
मैं मानती हूँ कि मैं कूदी.

मैं यह भी मानती हूँ कि मैं चिल्लाई - जब मैंने ट्रेन की छुक-छुक आवाज़ सुनी. क्योंकि वो मेरी पहली ट्रेन यात्रा थी.

लॉकवुड हमारे पास ही बैठ गया और शांत होने का नाटक करने लगा.

लेकिन जूलिया और मैं लगातार उछलते-कूदते रहे.

अंत में कूदते-कूदते कॉलर ने हमारी गर्दन को खरोंच दिया.

अड्डी, मैं बहुत चिंतित थी इसलिए मैं लगभग बीमार पड़ गई. जूलिया ने कहा कि किसी गुलाम को एक इंसान का तीन-पांचवां हिंसा माना जाता है. यह संविधान में लिखा है. मैंने कभी किसी गुलाम को नहीं देखा था और मैं अचरज कर रही थी कि गुलामों के कौन से अंग गायब होंगे? क्या वो एक हाथ, पैर, या पंजा होगा, या फिर कोई अंदर का अंग गायब होगा?

मैं लॉकवुड से नहीं पूछ सकती थी क्योंकि उसकी ज़ुबान बहुत तेज थी. तब जूलिया बड़े होने में व्यस्त थी, इसलिए मैंने अपनी चिंता को खुद तक ही सीमित रखा. फिर हम ट्रेन से दक्षिण में, चेसापिक-बे के पार पहुंचे. मैंने काले लोगों को बहुत घूर-घूरकर देखा, लेकिन उनमें क्या कमी थी यह मुझे समझ में नहीं आई .

रिचमंड में मैं एक होटल में रही. मैंने वहां की काली नौकरानी से पूछा, "क्या तुम गुलाम हो?" उसने सिर हिलाया और कहा, "मेरा नाम है तबीता - बस एक शब्द का, मेरे नाम में कोई दूसरा शब्द नहीं है." बिल्ली या कुत्ते की तरह, उसका केवल एक शब्द का ही नाम था, अड्डी. मैंने देखा बहुत घूर कर देखा, लेकिन उसकी एक नाक थी, दो आँखें, एक मुँह, दो हाथ और, हालांकि मैं उसके पैरों को नहीं देख पाई, पर मैंने उसके पैरों को उसकी स्कर्ट के नीचे देखा. फिर मैंने एक आह भरीं और जब तबिता ने खिड़कियां खोलीं तब एक मीठी देवदार की खुशबू अंदर आई. उसने सूँघा और कहा, "यह दक्षिण की गंध है, मिस."

अगले दिन, भाई हमें एक बग्घी में बागान की सैर कराने ले गया. पुराने पेड़ बूढ़े लोगों की तरह थे, और सूरज से हमारा सिर तप रहा था. बहन जूलिया को प्यास लगी और उसने एक लड़के से पानी माँगा.

लड़के का चेहरा इतना काला, गोल और भयंकर था, जैसे वो युद्ध में तोप से गोले से झुलस गया हो.

मैंने देखा कि वो जहाँ से पानी लाया वहाँ कोने में एक कचरे के ढेर के साथ एक झोंपड़ी खड़ी थी.

मुझे लगता है कि वहां कोई पलंग नहीं था और उसके दादाजी कपड़ों के चीथड़ों पर लेटे थे.

मुझे छोड़कर हर कोई मुस्कुराया और सबने सिर हिलाया.

कुछ जानवर, इंसानों से बेहतर हालत में रहते हैं, अड्डी .
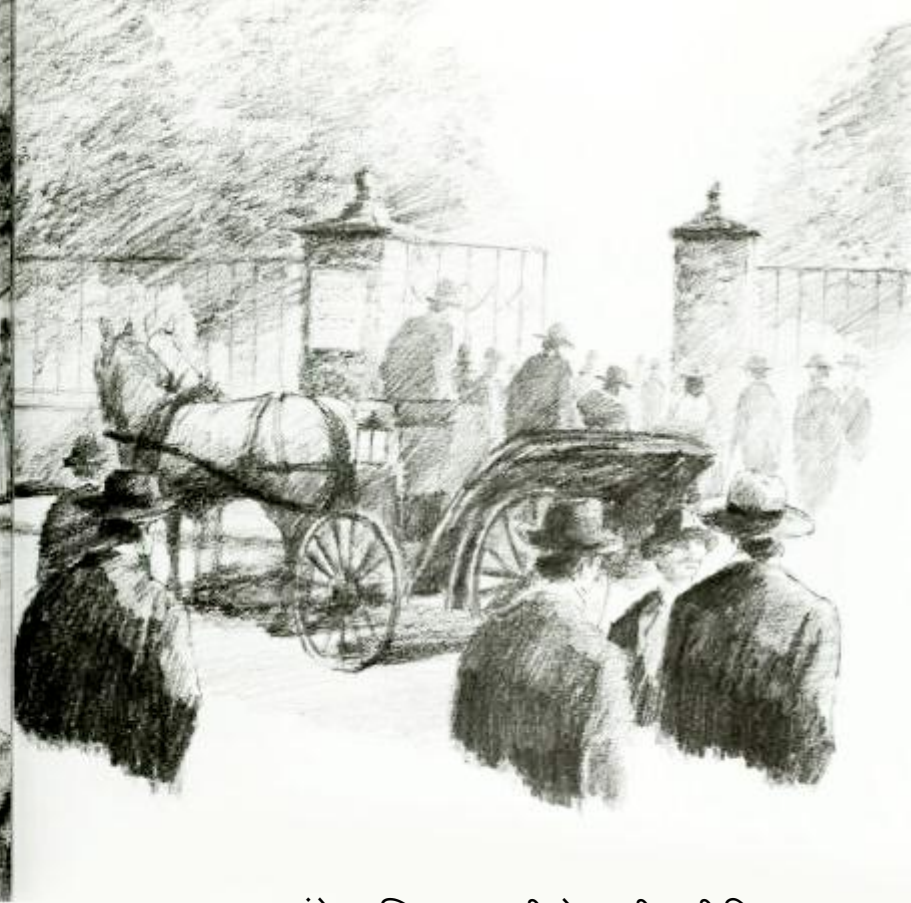
देवदारों से रात को इतनी मीठी सुगंध नहीं आई. वो गंध मेरी नाक में घुस गई. उस हफ्ते भाई घूमता रहा और लोगों से बातें करता रहा, उनका इंटरव्यू लेता रहा. शनिवार को हम शहर गए और सड़क पर एक हरे गेट के सामने जाकर रुके.

बाहर एक लाल झंडे पर लिखा था, "नीग्रो का नीलामी दिन." मैं अंदर नहीं जाना चाहती थी अड्डी, लेकिन भाई ने कहा कि उसे अपनी कहानी लिखने के लिए वहां जाना ज़रूर था. इसलिए उसने हमें अंदर खींचा और फिर हम वहां बैठ गए.
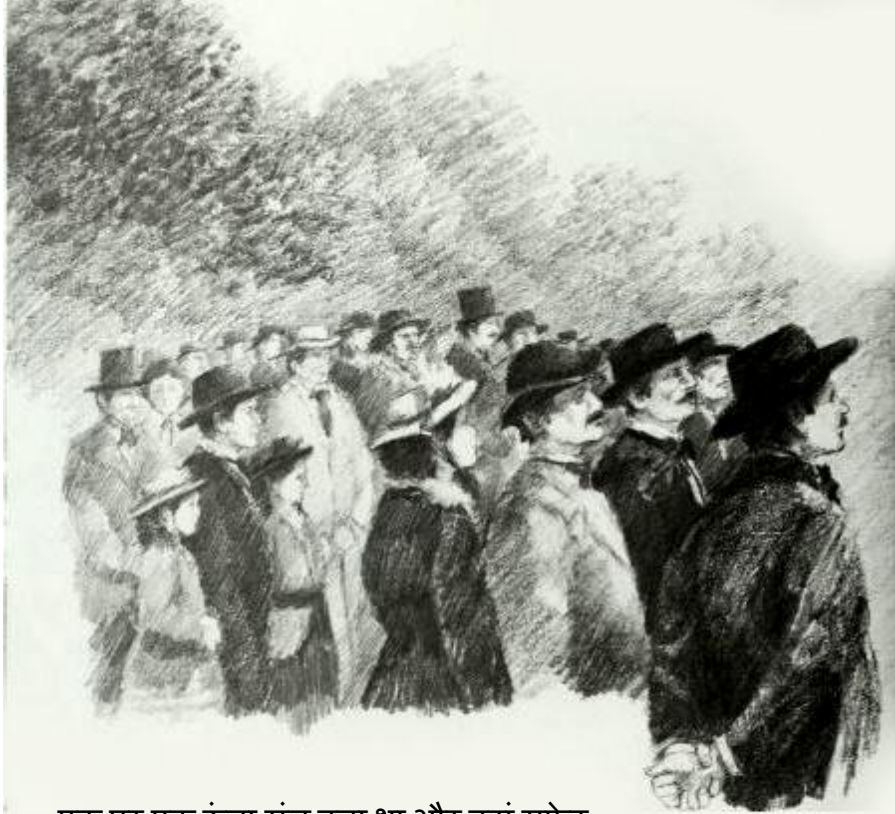
एक पर एक ऊंचा मंच बना था और वहां सफ़ेद
सूट पहने एक मोटा आदमी खड़ा था. प्लेटफार्म पर एक काली
महिला भी थी. "कूदो चाची, कूदो!" आदमी चिल्लाया.
किसी ने महिला की कीमत लगाईं और फिर वो बिक गई.
वो चली गई, अड्डी, किसी दुकान के काउंटर पर आटे की बोरी
की तरह वो महिला बिक गई.

हमारे बरामदे में मुरझाये चेहरे वाला एक आदमी था.
वो भी मंच पर दौड़कर गया और कूदा और वो भी बिक
गया. वहां दो बच्चे बिल्कुल हमारी उम्र के थे. वे दोनों एक-
दूसरे का हाथ पकड़े थे. लेकिन अलग-अलग लोगों ने उन्हें
खरीदा और फिर सफेद टोपी वाले आदमी ने उन्हें
ज़बरदस्ती अलग-अलग किया.

अड्डी, यह देखकर मेरा जी मिचलाने लगा और मैंने सभी पुरुषों और महिलाओं के सामने वहां उल्टी कर दी. लोग दूर अलग हट गए और उन्होंने अपनी नाक पर रूमाल रख लिया. मैं रोना चाहती थी, "मैं वो नहीं हूँ जो तुम सूंघ रहे हो!" लेकिन तभी भाई हमें घर ले गया. वो इतनी तेजी से चला कि मुझे पता था कि वो मुझ पर बहुत गुस्सा था.

उसने मुझे आराम करने के लिए लेटने को कहा.
उस बीच उसने और जूलिया ने हमारा सामान बांधा.
मैंने उसे यह कहते हुए सुना, "मैंने वो सब देख लिया जो मुझे देखना चाहिए था."
फिर हमने होटल छोड़ दिया. मीठे देवदार की गंध अभी भी हवा में उड़ रही थी, सूरज एक गर्म हाथ की तरह था. तबीता ने गेट से अपना हाथ हिलाया. उसने मुझसे कहा कि मैं अपना फर का कोट पहन लूं.

अड्डी, मुझसे अपने कोट के कॉलर का फीता नहीं बंध पाया.

मैं बीमार महसूस कर रही थी.

रात को जब हम घर आए तब सफेद बर्फ पड़ रही थी.

जूलिया ने जो कुछ देखा उसके बारे में उसने कोई बात नहीं करी.

लेकिन उस कमी को भाई ने पूरा कर दिया.

जब आप जून में आएँगी तो हम सेब के पेड़ पर अपनी मचान में

चढ़ेंगे और फिर मैं आपको वह सब बताऊंगी जो मैंने वहां देखा.

अड्डी, मैं उन विचारों को अपने दिमाग से बाहर नहीं निकाल पा रही हूँ. यदि हम एक तंग कोट की तरह काली त्वचा में फिसल जाएँ तो कैसे सब कुछ बदल जाता है. तब कोई भी हमें हमारे अंतिम नाम से नहीं बुलाएगा, क्योंकि हमारा अंतिम नाम होगा ही नहीं. तब हम अड्डी और नेट्टी ही रहते, अंत में हम बूढ़े होते और मर जाते. जब कोई हमें बुलाता, तो हम तुरंत कूदते!

हम सेब के पेड़ की पत्तियों के बीच से आने वाले सूरज की रोशनी में पढ़ नहीं सकते थे, क्योंकि कोई भी हमें पढ़ना नहीं सिखाता, और कोई हमें किताब भी नहीं देता.

और फिर अड्डी, कभी भी हमें एक सफेद टोपी पहने एक मोटा आदमी बेंच सकता था और तब हमें भी जाना होता.

प्रिय अड्डी, जल्द पत्र लिखना, क्योंकि मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है, और रात में मैंने तुम्हें सपने में देखा है.”

सप्रेम

नेट्टी

नेट्टी की दक्षिण यात्रा

अपने दोस्त को लिखे एक पत्र में, नेट्टी ने गृह-युद्ध से पहले की अपनी दक्षिण यात्रा के बारे में लिखा है. वो हवा में मीठी देवदार की गंध और सिर पर तपते सूरज को भी याद करती है. लेकिन वह तबिता को भी याद करती है, जो होटल में एक गुलाम नौकरानी थी, जिसका केवल एक शब्द का ही नाम था. उसे गुलामों की नीलामी बहुत अच्छी तरह याद है जहां लोग आटे की बोरियों की तरह खरीदे-बेचे जा रहे थे. नेट्टी इन छवियों को नहीं भूल नहीं पाती है, और वो कोई मदद भी नहीं कर सकती है लेकिन वो आश्चर्य करती है कि अगर वह एक गुलाम होती तो उसका जीवन कैसा होता.

लेखक की पर-परदादी की डायरी के आधार पर. एक युवा लड़की की आँखों से गुलामी पर एक मार्मिक और सम्मोहक नज़र. एक बार पढ़ने के बाद, आप इसे जल्दी भुला नहीं पाएंगे.